संकल्प

HINDI LITERACY TEAM
CHANDIGARH

कठपुतली कला

मैं हूँ प्रेरणा

प्रेरक और प्रेरणा स्कूल से घर लौटते हुए .....

और मैं हूँ प्रेरक

“दीदी! आज तो स्कूल में कठपुतली नाच देखकर बहुत ही मज़ा आया,इसके बारे में कुछ और भी बताओ न ।”

आओ प्रेरक, माँ से कठपुतली के बारे में विस्तार से जानते हैं ।

माँ.. माँ.. ! पता है
आज हमारे स्कूल में
कठपुतली का नाच
दिखाया गया

अच्छा ! तुम्हें कैसा
लगा ?

बहुत अच्छा माँ !
बहुत मज़ा आया

माँ, क्या तुमने
कभी कठपुतलियों
का नाच देखा है?

हाँ बेटा ! तुम्हें पता है कि तुम्हारे दादा –दादी ,नाना –नानी बताते हैं कि जब टीवी, मोबाइल,सिनेमा नहीं होते थे तब मनोरंजन के लिए लोग कठपुतलियों का नाच देखने जाया करते थे।

माँ ! माँ ! इसके बार में
और भी कुछ बताओ न !

भारतीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब लोक कलाओं में झलकता है। इन्हीं लोक कलाओं में कठपुतली कला भी शामिल है।

यह कला इंसानों की सबसे उल्लेखनीय और सरल आविष्कारों में से एक है। तुम्हें पता है कि इस कला का इतिहास सैंकड़ों वर्ष पुराना है।

यह कला भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी खूब प्रचलित है।

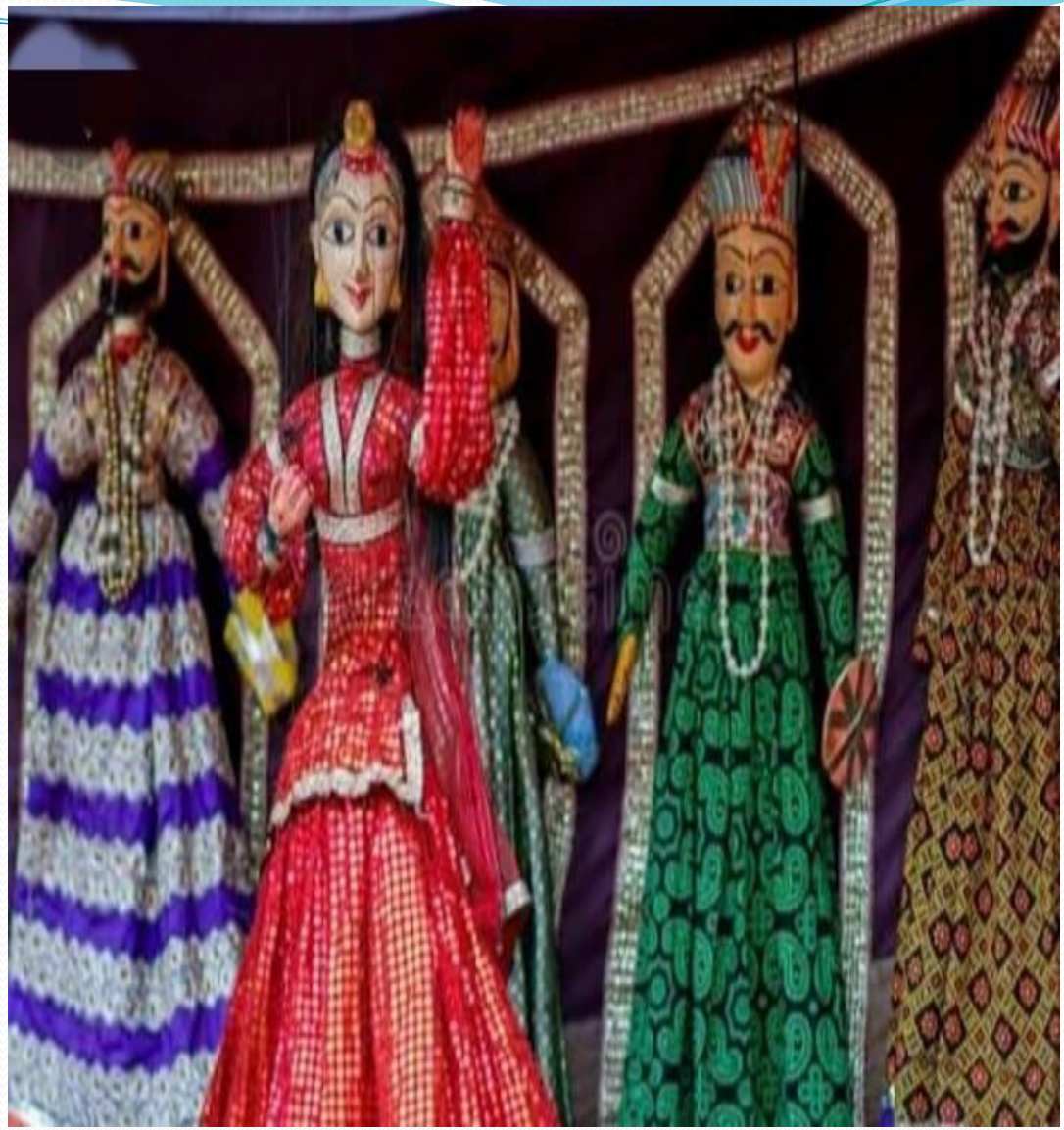

माँ ! क्या कठपुतलियों का नाच केवल मनोरंजन के लिए ही दिखाया जाता है ? क्या इसे हम पढाई में भी प्रयोग कर सकते हैं?

हां बेटा! बिल्कुल , इस कला का प्रयोग मनोरंजन के अतिरिक्त शिक्षा , विज्ञापन या अनेक सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य कसने के लिए भी किया जाता है।

धागा कठपुतली

तुम्हें पता है, यह कला चार प्रकार की होती है, जिसमें पहली है : धागा कठपुतली ; जिसमें कठपुतली के विभिन्न अंगों को जोड़ा जाता है और उन्हें धागों द्वारा संचालित किया जाता है।

छाया कठपुतली

दूसरी होती है छाया कठपुतली ; इस कठपुतली का संचालन परदे के पीछे से किया जाता है, जिसे दर्शक दूसरी तरफ से परछाई के रूप में देखते हैं। जैसे बिजली चले जाने पर मोमबत्ती के प्रकाश में तुम दीवार पर पक्षी या हिरण की आकृति बनाते हो ।

????.
....

दस्ताना कठपुतली

इस शैली को भुजा या हथेली कठपुतली भी कहा जाता है। इसमें अंगूठे और दो अँगुलियों की सहायता से कठपुतलियाँ सजीव हो उठती हैं।

छड़ कठपुतली

यह शैली वैसे तो दस्ताना कठपुतली का अगला चरण है लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है। यह नीचे स्थित छड़ों पर आधारित होती है और उसी से संचालित होती है।

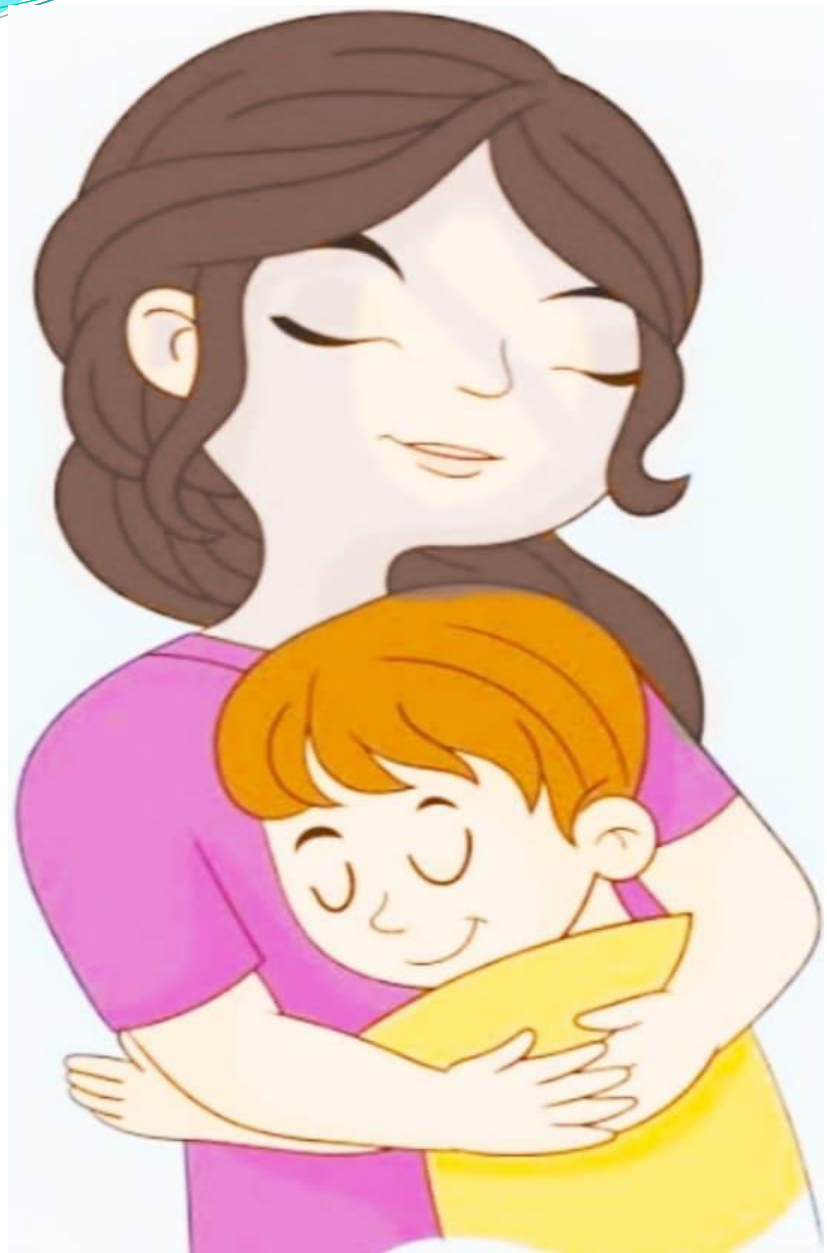

माँ ! यह जानकारी तो बड़ी मज़ेदार थी। मैं अपने दोस्तों को भी बताऊँगा।

यह सब जानकर वे सब भी खुश हो जाएँगे।

धन्यवाद माँ !

आओ थोड़ा और जानें

*इस कला का इतिहास इतना पुराना है कि ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में पाणिनी की अष्टाध्यायी में नटसूत्र में कठपुतली के नाटक का प्रमाण मिलता है ।

*ओडिशा में छड़ कठपुतली को काठी कुण्डी और बिहार में यमपुरी कहते है।

*कठपुतली नाच मुख्यतः राजस्थान में प्रसिद्ध है।

*विश्व कठपुतली दिवस 21मार्च को मनाया जाता है।

आओ

1. कठपुतली कला कौन सी विधा के अंतर्गत आती है ?
   क. कविता
   ख. संस्मरण
   ग. नाटक
   घ उपन्यास

ज्ञान

2. चित्र देखकर इस कठपुतली कला का प्रकार बताएं ?

परखें

3. कठपुतली शब्द में 'कठ' का क्या अर्थ है ?
क. कागज़
ख. लकड़ी
ग. कपड़ा
घ. लोहा

उतर 1. नाटक

उतर 2. धागा कठपुतली

उतर 3. लकड़ी

•संकल्प पत्रिका का यह अंक कक्षा सात की पाठ्य-पुस्तक वसंत भाग 2 के पाठ 'कठपुतली' से प्रेरित है तथा यह सीखने के विभिन्न प्रतिफल जैसे स्वाभाविक अभिव्यक्ति , कल्पनाशीलता, कौशल और सोच, अनुमान और कल्पना, हाथों से की जाने वाली गतिविधियां, कला सम्बन्धी दक्षता व रुचि को पूर्ण करता है।